IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 5, Issue 6, June 2025
Impact Factor: 7.67

भारत में नगरीकरण का सामाजिक संस्थाओ पर पड़ने वाले प्रभावो का अध्ययन

डॉ. शाहिदा सिद्दिकी[1]
प्राध्यापक समाजशास्त्र विभाग
शासकीय ठाकुर रणमत सिंह महाविद्यालय, रीवा (म.प्र.)
ममता जायसवाल[2]
शोधार्थी समाजशास्त्र
शासकीय ठाकुर रणमत सिंह महाविद्यालय, रीवा (म.प्र.)

शोध सारांश

भारत में नगरीय संरचना का विकास अत्यन्त ही प्राचीन काल से यानि सिंधु घाटी की सभ्यता से समकालीन अवधि तक हुआ है। भारत में जो सामाजिक परिवर्तन हुए जैसे, औपनिवेशिक प्रभाव, आधुनिक शिक्षा का प्रारम्भ, परिवहन और संचार के बेहतर साधन आदि की शक्तियों का समाज में विभिन्न संस्थाओं पर प्रभाव पड़ा। उनका प्रभाव पूरे भारत में महसूस किया गया है किन्तु गांव में रह रही आबादी की तुलना में नगर में रह रही आबादी पर इसका प्रभाव कहीं अधिक देखा गया है। भारत में गांव और नगर एक ही सभ्यता के भाग है और इसलिए इन्हें अलग–अलग नहीं समझा जा सकता है। इसलिए भारत में नगरीय सामाजिक संरचना जैसे परिवार, विवाह, नातेदारी और जाति की दृष्टि से की गई है। इन सभी चार पहलुओं का ग्रामीण और नगरीय दोनों सामाजिक संरचना में परस्पर निकट संबंध है।

मुख्य शब्दः– सामाजिक परिवर्तन, संस्था, आबादी, सामाजिक संरचना, सभ्यता, परिवार, विवाह, नातेदारी आदि।